प्रश्न → भारतीय इतिहास लेखन में (3) पुरातात्विक स्त्रोत के महत्व का वर्णन कीजिए।

(3) पुरातात्विक स्त्रोत (ARCHEOLOGICAL SOURCES)

प्राचीन भारतीय इतिहास को जानने में पुरातात्विक स्त्रोत अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं। इतिहास की सर्वश्रेष्ठ कसौटी परम्परा नहीं, पुरातत्व है। जिस ऐतिहासिक तथ्य को पुरातत्व का समर्थन प्राप्त नहीं है, उसकी नींव

बालू पर है। पुरातत्व वह विज्ञान है जिसके माध्यम से पृथ्वी के गर्भ में छिपी हुई सामग्रियों की खुदाई कर प्राचीन काल के लोगों के भौतिक जीवन का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। प्राचीन भारतीय इतिहास के वैज्ञानिक एवं क्रमबद्ध अध्ययन में पुरातात्विक स्रोतों से अत्यन्त मदद मिली है। साहित्यिक स्रोतों की तुलना में पुरातात्विक स्रोत अधिक प्रामाणिक होते हैं।

कुछ प्रमुख पुरातात्विक स्रोतों का विवरण निम्नानुसार है–

(i) शिलालेख अध्ययन एवं उसका महत्व (Epigraphy and its Importance)

अभिलेख प्रमुखत: तीन प्रकार के मिलते हैं।

(i) प्रथम श्रेणी में वे अभिलेख हैं, जिनमें अधिकारियों और जनता के लिये जारी किये गये सामाजिक, आर्थिक व प्रशासनिक राज्यादेशों एवं निर्णयों की सूची मिलती है।

(ii) द्वितीय श्रेणी में वे अनुष्ठानिक अभिलेख आते हैं, जिन्हें बौद्ध, जैन, शैव वैष्णव आदि सम्प्रदायों के अनुयायियों ने स्तम्भों, मन्दिरों एवं प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण कराया।

(iii) तृतीय श्रेणी में वे अभिलेख आते हैं, जिनमें विभिन्न राजाओं की विजयों एवं प्रशस्तियों का वर्णन मिलता है। इनमें प्रमुख हैं–

प्रयाग प्रशस्ति–हरिषेण द्वारा रचित प्रयाग प्रशस्ति में गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त के राज्याभिषेक, दिग्विजय एवं व्यक्तित्व की जानकारी मिलती है।

हाथी गुम्फा अभिलेख–चेदिराज खारवेल की विजयों का वर्णन है।

जूनागढ़ अभिलेख–रुद्र दामन के जूनागढ़ अभिलेख से सुदर्शन झील के पुन: निर्माण की जानकारी मिलती है।

एरण अभिलेख–म. प्र. के सागर के पास स्थित धन्यविष्णु के एरण अभिलेख से भानुगुप्त एवं हूण आक्रमण की जानकारी मिलती है। यह 510 ई. में सतीप्रथा का सर्वप्रथम अभिलेखीय साक्ष्य है।

एहौल अभिलेख–रविकीर्ति के एहौल अभिलेख से पुलकेशिन द्वितीय हर्षवर्द्धन की पराजय का पता चलता है।

(ii) मुद्राशास्त्रीय अध्ययन एवं उसका महत्व (Numismatics and its Importance)

सिक्कों से कभी-कभी सम्राट की रुचि एवं धर्म का भी पता चलता है। कनिष्क के सिक्कों से पता चलता है कि वह बौद्ध धर्म का अनुयायी था। एक सिक्के पर गुप्त सम्राट समुद्र गुप्त वीणा बजाते दिखाया गया है, इससे पता चलता है कि वह संगीत प्रेमी था।

(iii) **स्मारक** (Monuments)–सिन्धु घाटी सभ्यता के शहरों के अवशेष स्नानागार, अन्नागार, पाटलिपुत्र का चन्द्रगुप्त मौर्य का राजप्रासाद एवं विभिन्न मन्दिर, इमारतें, मठ आदि से विभिन्न युगों की सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक परिस्थितियों को समझा जा सकता है।

(iv) **मूर्तिकला** (Sculptures)–तत्कालीन समय की धार्मिक आस्था की अभिव्यक्ति मूर्तिकला में दृष्टिगोचर होती है। कुषाणकालीन मूर्तियों में स्वाभाविकता एवं गुप्तोत्तरकालीन मूर्तिकला में सांकेतिकता अधिक है। इनके अलावा भरहूत, बोधगया, सांची, अमरावती की मूर्तिकला में जन-सामान्य के जीवन की यथार्थ झाँकी दृष्टिगोचर होती है।

(v) **चित्रकला** (Paintings)–अजन्ता, एलोरा एवं वाघ की गुफाओं के चित्र तत्युगीन संस्कृति के परिचायक हैं। अजन्ता गुफा में उत्कीर्ण 'माता और शिशु' एवं 'मरणासन्न राजकुमारी' आदि चित्रों से गुप्तकालीन कलात्मकता एवं तत्युगीन जीवन की झलक मिलती है।